ह्रिनाथ[illegible] देव [illegible] बालगुंदरस्वादा॥ बाल

दियल[illegible]दवी श्रीबालगुंदरस्वादा॥ [illegible] ॥ त्वाकवलि

श्रावा[illegible] ॥ ॥ थूपादिसवथ॥ जाव, [illegible]

मू[illegible] ॥ [illegible] मालवाह्निधर्ं॥ महाहृबरवाह्निनाउ

[illegible] बिव[illegible]दविरं [illegible] निमपायदूसान्चिगा

[illegible] निवं, समा[illegible]। वि

ह्वदम् ॥ म ... आदिन्यासः ॥ अस्य मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषय २ ॥ भि ॥ गायत्री
छन्दसे न... ॥ ह्रौं माया देवतायै हृदि ॥ ह्रौं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ह्रौं माया श
क्तये पादयोः ॥ नमः ॥ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ॥ पुनराङ्गन्यास न्यासः ॥
ह्रौं हृदयाय नमः ॥ ४ ॥ ह्रौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ह्रौं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ नमः म
ध्यमाभ्यां वषट् ॥ नमः अनामिकाभ्यां हुं ॥ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वषट् ॥
ह्रौं करतलपृष्ठाय फट् ॥ एवं हृदयादि ॥ ॥ जलपात्रपूजा ॥ गायत्री ॥ कुल ह्रौं

विद्महे मन्त्रकादम्बरी धीमहि तन्नो कुब्जिका प्रचोदयात् ॥ अर्घपात्र
स्थापन शुद्धि स्नान पूजा ॥ ॥ मालिनी ... बलि ॥ सुवर्णमावाह दि
देव ॥ ॥ अस्मितां मादि जकिन्यान्द ॥ मूलदेवीपूजनं ॥ ध्यान ॥ ध्यायेत्
नमः ॥ मयूरासनाय नमः ॥ ध्यानं ॥ मन्त्रवार्णं ... द्विभुजं
वर्णां ॥ ... कर्णविभूषण ... ॥ मयूरध्वजिनीं नकुल
... ॥ ध्य

नयूथीर॥याग्रार्घ मनायीं॥ ॥कौंकौमार्य्यैनमः३॥ शिखा॥ कौंवंकौ
मारीदवीउ॥वलि॥ ॥नमास्तुपूजा॥नक्षीयास्थकमालिकाये पूयाव
नायश॥स्त्ररयायर॥ ॥तस्थिक्षयचयनलि॥नमास्थावनश्यपूजा॥षडंकाल॥
कौंहृदयाय॥कौंशिर॥मा शिखा॥य्यैं कवच॥नं नेत्र॥मः अस्त्राय॥ इति
षडंगपूजा॥ ॥नमष्याङ्ग कालं॥ॐ श्रीं हृदयायेर॥ श्रीं डाविश्री शिरा॥ स्रीं स
नायेर॥ मों मानायेर॥ मों मङ्गुदयेर॥ इति यङ्ग कालं॥ ॥नमाह
यत॥ब्रह्माण्याहदि॥ इति यङ्ग कौंलं॥ ॥नमाह कालं॥इन्द्रादिपूजादि॥
इतियङ्ग कालं॥ ॥ध्यावाङ्ग लक्षिपूजा॥थनमालक्षाप्जनं॥ क्षताम्नायादि
निर्वाणान्त॥ ॥विदवयावलि॥ मूलवलि॥ नवं गधी कालायूचडिहाङ्
कौमारी या ना यो. कौं वर्णिकायाम्याक्ष डुं काउकरोनवालियिलिवलिर
क्रस्वाहा॥स्वहल्यादियनेक्षिनधवीख्यावलि गृह्ण स्वाहा॥ डडुंब्रह्मा॥
ध्रुयादि. मङ्गलान्तजाय॥नेत॥ ॥नवाम्र वानूनयूत. निमियूघसी कौं.

गत्वा यु श्री हृन्नमू नास्तु नमो गुरुवे । ज्ञानावबोधविविधमघ्नु गन्धयनमो ।
श्रीमा त्रिकोणवत्यार्घ्यं हस्ताब्जे नौमि ॥ यथावान.वार्थ ॥ मर्थेन ॥ पञ्चवल्यादि
सर्वपूर्ववत् ॥ इति श्रीमानी पूजाविधि ॥ ॥ ७ ॥ यालपूजा ॥
आरम्भ ॥ अथ यजमानस्य मातृकाकेत्याल पूजानिमित्यर्थं ॥ भूतशुद्धि
गतसर्व ॥ गुरुनमस्कारादि प्राणायाम ॥ ॥ मातृकान्यास ॥ योन्यास ॥
नगामूलमन्त्र अंगादिन्यास ४ ॥ ध्यानमन्त्र हृव ब्रह्माअयवयनम ४ ॥ लिंग ॥ न

यगीत्वन्नस्ररमूखे ॥ कुलयालदेवतायेरहृदि ॥ श्रीं बीजायरकं ६ ॥ न
म ४ गक्रयेरपादयो ४ ॥ सर्वं क्रीलक्रायर.सर्वांगे ॥ इति अंगादिन्या
स ४ ॥ ॥ गणक्षत्र षडंगन्यास ॥ ज्ञः कूलयरदूं ॥ ४ ॥ श्रीं सूत्र स्वाहाः
रक्तकमल षडंगन्यास ॥ ॥ जलयात्रपूजा ॥ गायत्री ॥ निरवानाथ
यविद्यामि ॥ ॥ अर्घयात्रपूजा ॥ हंसमुक्तात्मपूजा ॥ मालिनी पंचबलि
व ॥ ॥ सर्वकार्य.विदव ॥ हेतुकादि ॥ ॥ गणमूलदेवीपूजनं ॥ ध्यान ४ ॥

आतानमाकं द॥ प्रेतासनाय नः॥ ध्यानं॥ मलेस्थ सिंहिनः ष्टव. मञुरुन
डिसमयरं ४ वर्तुलीपतिनयन. मूर्द्धपिङ्गजटाधरं॥ दंष्ट्राकरालव
दनं. लीमनूपं दिगम्बरं दक्षिणकपालखड्ग. वामसपविलुविनं॥
ध्यानपूर्वं रुधारा धार्घा वमनी यादि. पूजाकं॥ ॥ह्रीं कपालाय नः॥
र॥ जिह्वाखड्ग नन्ति धा॥ नमाल्पपूजा॥ नजाये नः॥ कपालाय नः॥ स
म्बिन्ममयादि॥ ॥नमोष्टावनयपूजाषद्धान॥ ॐ ह्र. ह्रीं सिंववंप्रकार
न॥ ॐ लिषद्धाल॥ ॥नमोमृत्युपतयपूजा॥ ॐ मूनलाय नः॥ ॐ मूनि
कंभायनः॥ कं कपालाय नः॥ यं यन्त्रिकानवाय नः॥ मैम कायाय नः॥ यं वि
लिमालायनः॥ विं विमोक्षीय नः॥ उं उद्दक्षमकाय नः॥ ॐ यक्षदलपु
जा॥ ॥नमोष्टकालपूजा॥ ॐ ब्रह्मादि. वजादि॥ ध्यावाङ्क. धनुर्मूर्द्धा॥
षडाम्नायादि निर्वाणान्तं॥ ॥नमोवलि. विदवशा॥ मूलया॥ अर्क्की
दि. वि. वि. षीपुनूर तञ्जय नन्दियर विप्रसमहार्षव वकपाल

यवलिं गृह्ण स्वाहा। उर्द्धवृक्षाणुयादि॥ धूपादि। जाप. स्तोत्र। पूर्ववत्॥
नित्यानन्दमयं भाक्त. निर्व्विकल्पं निरामयं। श्यामागीतपदं भक्तरेव
वैतं नमाम्यहं॥ कल्प्यालमूदितं श्रितरीमं. सर्व्वलोकविहितं सुखदं हि.
शवमासनगंदिगवस्त्रं. गन्नमामिश्मशानं निनसाहं॥ यथान. यो॰क्षव
मर्घ्यं॥ येनुयाग॥ समयादि॥ ॥पञ्चमीन स्वमाष्टकाष्टकन्द पूजाया
दि॥ ॥निर्म्मालपूजा॥ वलुन्धनायरः॥ क्षमिलेनवाह्वनं॥ ॥७॥
कपी॰ पूजाद्वक्त
क्रमम्॥ ॥

गणवेषूवी पूजा॥ आचम्य॥ पूर्ववत्॥ मातृकान्यास ४॥ पी॰न्यास ४॥ ग
णमूलमन्त्र अष्यादिन्यास ४॥ अस्यमन्त्रस्यानान्दभ ऋषयरः. शिरसि॥ अनुष्टु
पूछन्दसे रः. मुखे॥ वेषूवी देवतायेरः. हृदि॥ स्वकवीजायरः. कं ॥ टकाय
शक्तयरः. पादया ३॥ यस ४ कीलकायरः. सर्व्वांगे॥ ॐ॰ तिसव्यादिन्यास॥
गणक्षवुवउं गन्यासो॥ यं अं अंगुष्ठयरः॥ ७॥ ॐ कं वं क्षुं गुप्ताग्रे॥ टं
गंयं तर्जनीभ्यां॥ यं अं मध्यमा०॥ यं अंनामिका॥ टंगंयं कनिष्ठिका॥

क्रं [illegible] कनकलदृष्ट्याँ॥ एवं हृदयादि॥ नमनोयस्न्यास४॥ ऐंर
वऊँ॥ [illegible] ४॥ वंरऊदनं॥दंरवाहे॥नंरगुष्ठे॥यंरयादया॥यंर
जंघया॥गंरजघन॥ऊंरसर्वांगे॥ ॐ ति मूलन्यास४॥ ॥नगज
लपात्रपूजा॥गायत्री॥महामायायै विद्महे,वह्निकायै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् यं ७॥ ॥अर्घपात्र,स्थापनात्मपूजा॥
मालिनी,पञ्चबलि॥ ॥सिंदूर,तिलक॥मूलदेवीपूजा॥ध्यान॥ध्यानम

कृत॥सिंहासनाय॥नम॥अनन्तासनाय॥ध्यानं॥नानपुष्पफली कामं मूकमू
ण्डजलम्बिनी ललत्काञ्चनसङ्काश,कुण्डलोज्ज्वलमालिनी॥स्वर्णनतसमून
द्व,किरीटसूपधारिणीं कण्ठकुञ्जानने नेत्रे,त्रिलोचनविभूषितां॥वन्
कदम्बवसनीं,किंचिद्वरमालिका।कस्तूरिकाविशालाक्षी,हृच्चैकादिसम
पूरां॥चतुर्भुजां विवसनां,पीनोन्नतपयोधरां,दक्षिणाद्यौकनायाङ्कुश
मुद्रोर्जपमालिकां॥दिव्यां वामहस्तयोर्मरपद्मवरन्धाञ्जानपनाग

नानारूं.शुक्रगुल्मं तयाणिं क्वां॥गाछेन नूतन कलश. समयगा लं वो वस्थिनं
क्रिपिद्रूस॥शिवव नं. याहन क्वांमद्रु मूद्रूहायकलशनन पूनस्सेस्थं. निबी
हर्न्ह्यो स्ववाहनं॥ध्यानपूर्थंर॥आवाहन.पूयान्हं॥ ॥ॐ कं चं टं तं पं यं
शं वेस्मूर्थ्ये२॥त्रिधा॥गर्व्वं वस्तूर्थ्ये२॥३॥वलि॥ ॥अस्त्रपूजा॥खड्गायरु॥
जयमालिकाये२॥वनोत्तुयरु॥कुरुयायरु॥ ॥सन्धिकालं ६०॥नगाद्रवन
पूजा॥ॐ कं चं हं द यायरे॥टंगं पं सि वसे॥यंनं सिरुवाये॥यंगं क वं वाय॥

टं गं पं न रुत यायय॥ॐ कं चं शुक्र॥ॐ हिं वद्धालं॥ ॥नगा स्थयरु पूजा॥ॐ
कौल पूर्थ्ये२॥वं वटुक घाटायये२॥स्कं स्कन्दमाते२॥कं कालनाथ्ये२॥वं व
लिकायरु॥कं काद्यायिन्ये२॥कं कुष्माण्डाये२॥मं महालक्ष्मीये२॥ॐ थ
स्थयरु पूजा॥ ॥ॐ ब्रह्मादिदशादि॥ॐ पञ्चकालपूजा॥ ॥यां पञ्चाननना
यरु॥मं महामाया ८॥ह्ववन॥आवाहन दुन्हु पूजादि॥थनमानं काहुज
न. कुमारी याद्य॥निर्वाणान्हं॥ ॥नगा वलि॥द्वधवथा॥मूल वलि॥नटं

॥श्रीअट्टहासभैरवाय॥ वैष्णवीदेवसिद्धिपद्दिनीनैर्ऋत्यांकृद्धिकायभद्ररोनव
लिपिनिनवलिंग ह्रूं स्वाहा ॥ लोलपूज्यादियकंकिणदेवीयावलिंग ह्रूं
स्वाहा ॥ उर्द्ध्वकंकालु ॥ धूपादि नाय ॥ मूँ नम्वाहा १०८ ॥ जाप ॥ स्तुति ॥
स्तव नियम गिहानीमन्त्र स्वाहा न्याय नाम्बा स्तवमन्त्र बन्तुया निलिंगा ॥ ल
षट्रूपा ॥ दिनकनमसन गजा स्वा वराबान्हुं थ्वा मसनसपुजा दापीवैष्णवी
याउनिर्ये ॥ यथवा ॥ वाकनसहा ॥ पूर्ववत् ॥ इतिवैष्णवीपूजाविधि ॥ ॥

गणवावाहीपूजनं ॥ मृवस ॥ सूत्र यजमानस्यमार्ग कावावाहीपूजानि
मित्यर्थं कलमार्ग जायर ॥ अद्भिनि ॥ गुरुनमस्कार त्रयाणां यामं ॥ मातृका
न्यास ॥ पीठन्यास ॥ ततो मूलसब्या दिन्यास ॥ अथ मन्त्रस्य कपिलऋषिः
यर लिय ॥ अनुष्टुप्छन्दः सर मूर्ध्व ॥ वाम्गिनिकावावाहीदेवता यर हृदि ॥
ॐ ह्रीं ॐ ॐ ॐ बीजा स्वां र कुलं ॥ ह्रीं स्वाहा कीलकाय र पादयोः ॥ मम पूजा
दनेविनियोगाय र सर्वाङ्गे ॥ ॥ ततो कलैषड्न्यासो ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॐ ॐ [illegible]

मूलायरु स्वाहा ॥ ४ ॥ त्रिलौं अंगुष्ठाभ्यां २ ॥ ० ० ० तर्जनीभ्यां ॥ ह्रूं मध्य
माभ्यां ॥ स्वां अनामिकाभ्यां ॥ हां कनिष्ठिकाभ्यां ॥ त्रें ० ० ० हूं स्वाहा करत
लपृष्ठाभ्यां ॥ न्यं हृदयादि ॥ ॥ गंगाजलया पूजा ॥ गायत्री ॥ वं ह्रूं :
वार्त्तालिकाये विघ्नहृ. बानादिकाये धामद्दी. तत्व ४ कालय वादयाग ॥
गंगा अर्घ्यया पूजा ॥ उगु शिष्यात्मपूजा ॥ मालिनी. मंत्र बलि ॥ ॥ सं वर्ण. शिव
गंगा मूलदेवा ब्वने. ग्रह ॥ आधार के ४ ॥ महिषासनाय र ॥ ध्यान ॥ द्वाभ्यां ध्य

(१)

यक्षनादेवी विघ्नहासी कवाम्बुजे भद्र ध्याना मह्मं यामं. मह्मं नं गकिमवव
विघ्नहासां शिनयोंमं नाग यक्षमें थाविघून ॥ ध्यानपूर्ण २४ ॥ यायादि
पूर्ण ॥ ॥ शिध ॥ वैं लौ ० ० ० स्वाहा वार्त्त विकाये ३ ॥ गब्यां वावा हिकाय
३ ॥ बलि ॥ ॥ गंगाक पूजा ॥ अंकु गायर ॥ पाशायर ॥ मू पूँ मबाय ॥ ग
क्षेर ॥ ॥ सम्बिम हृदयादि ॥ गंगा आवनन पूजा ॥ गगयक्षा पूजा ॥ वं :
लौं हृदयाय ॥ ० ० ० . शिरसे ॥ ह्रूं शिखायै ॥ खां. कवचाय ॥ हं नेत्रत्रयाय ॥

ॐ ह्रीं ००० ह्रूं स्वाहा स्रूस्राय ॥ ॐ त्रिषट्कोणपूजा ॥ वार्णलीवानाहीवानाह

यर ॥ ॥नमः षट्कोणपूजा ॥ ह्रौं ह्रि ह्रिनेयेर ॥ वौं नूं धिनेयेर ॥ जौं जम्र्युयेर ॥

मौं मा ह्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ ॐ त्रिपञ्चकोणपूजा ॥ ॥नमः अष्टपत्रपूजा ॥

ॐ ता ह्रिनेयेर ॥ वौं वा ह्रिनेयेर ॥ लौं ला ह्रिनेयेर ॥ सौं सा ह्रिनेयेर ॥ हौं हा ह्रिनेयेर ॥

स्लौं स्रूम्रू नेयेर ॥ क्षौं क्षा धिनेयेर ॥ ॐ षोडशपत्रपूजा ॥ ॥नमः द्वादशपत्रपू

जा ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ जूं स्रूजायर ॥ जौं जम्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ ॐ एकः

यालायर ॥ जौं जम्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ अं अदिवूध्वायर ॥ जौं ज म्रिनेयेर ॥ स्लौं

स्रू म्रिनेयेर ॥ वौं विनूयाक्षायर ॥ जौं ज म्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ हं हनायर ॥

जौं ज म्रि ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ वं वज्रनूयायर ॥ जौं जम्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ तं

शुम्बकायर ॥ र्नं रिनी स्लं रिनी ॥ सं सनं ध्वनायर ॥ जौं ज म्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रि

नेयेर ॥ सं साविश्रीर ॥ जौं ज म्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ जौं जयन्तीर ॥ जौं ज म्रिये.

स्लौं स्रू म्रि नेयेर ॥ यं यिनाक्षीर ॥ जौं ज म्रिनेयेर ॥ स्लौं स्रू म्रिनेयेर ॥ ॐ अपराजित

येरः ॥ जौं क्ष्म्लिं न्यैरः ॥ क्लीं क्ष्म्लिं न्यैरः ॥ ॐ हूं ह्रायरः ॥ जौं जक्ष्म्लिं न्यैरः ॥ क्लीं क्ष्म्लिं न्यै
रः ॥ धं धायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ रं रगायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ यूं यूक्ष्मरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न
मिं मिशायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ वं वक्ष्मलायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ ऊं ऊर्च्चमन्नरः ॥ जौं न
क्लीं न ॥ ऊं ऊष्मवरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ विं विवस्वगरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ उं उस्थैरः
जौं न ॥ क्लीं न ॥ विं विष्णवरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ धं धवायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ धुं धु
वायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ हं हंसामायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ धूं धूम्रैरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥

ऊं ऊष्मनिलायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ अं अनलायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ उं उग्रयूषाय
जौं न ॥ क्लीं न ॥ खं खलासायरः ॥ जौं न ॥ क्लीं न ॥ ऊं ऊर्ध्वनिक्षमानाथैरः ॥ जौं
जक्ष्म्लिं न्यैरः ॥ क्लीं क्ष्म्लिं न्यैरः ॥ इति भैरवपूजा ॥ बाहुवने ॥ महिषपू
नसिंहायरः ॥ सहस्रभैरवपूजा ॥ ज्रौं वा नाथैरः ॥ नामादि कीनलि
ख्विनमन्नकृताः ॥ इति सहस्रभैरवपूजा ॥ ॥ वटुकस्य ॥ वं वटुका
यरः ॥ कं कपालायरः ॥ यां यामिन्यैरः ॥ गं गणपतयरः ॥ इति वटुक

सपूजा॥ ॥गणाद्धूस्टंह्म॥ ॐ ह्राद्दिक्रजादि॥ ॐ यद्भूक्ताले॥ ॥नमु
वाक्र.कालमूद्रा॥ ॥थनमालेंकाखजाम्नायादि निर्व्वाणत्वं॥ततांव
लि॥ॐ प्रक्रुद्दिदवीपूतवद्रकनाथकपिलजदाालरासूर.त्रिनयनालि
मूख.सर्व्व विघ्नान्नाशय २ सर्व्वोपद्रवान्सहितं बलिं गृह्न २ स्वाहा॥वटुक
या॥ॐ ह्रं स्वस्तानन्दयालहरी.सर्व्वकामं पूनय २ स्वाहा॥वटुकया॥गां गीं गूं
गणपतयेवनरदसर्व्वजनं मेवशमानय २ सर्व्वोपद्रवान्सहितं बलिं गृ

ह्न २ स्वाहा॥गणेशया॥ॐ यांयामिनी स्याबलिं गृह्न २ स्वाहा॥यामिनी
या॥ ॥मूलबलि॥ॐ गं गं श्रीजयन्त्यादि मातृक्वा वाहीकलु कीवानूगाढ्
ढ्रिका॰दरेंनवालि यिमिगबलिं गृह्न २ स्वाहा॥उर्द्धव स्कलु॥धूपा
दिनेवय॥जाय॥त्रिं लीं॰॰॰ ह्रूं स्वाहा॥१०८॥मङ्गलस्तोत्र.पूर्व्ववा॥
कालवकलुरारीमनूपिणी.सान्वमानम नसायिविवाधिनी॥सोह
सामम कवाउ॥शिवं ह्निदीननामेपहनालु कानी॥यथवान॥षडुव

लि ॥ पूर्ब्बद्वतीर्थपूर्व्व ॥ सादिथपवार्क्कनसह ॥ ॐ गिवा वारिपूजावि
धि ॥ ॥ ७ ॥ गणेश्वरीपूजा ॥ नालिय ॥ अद्य यजमानस्यम
मकेन्द्रायनीपूजानिमित्यर्थं फलं ॥ अर्घविनियामि ॥ गुरु नमस्का
न प्राणायाम ॥ मार्कन्यास ॥ यो न्यास ॥ नमो मूलमन्त्रं षडादिन्यास
॥ ध्यान ॥ गुरु मूल षडर नित्र ॥ मपत्नीकन्दसरमूर्द्ध ॥ ॐ हूं वज्ज्र
देवताय हृदि ॥ ॐ वीजाय कं ॥ ॐ ह्रां नीमक व यादया ॥ नमठक

लकाय सर्वाङ्ग ॥ ॥ नमस्कारं कृत न्यासो ॥ ॐ सूक्ष्माय हृदु ॥ ४ ॥ ॐ मू
गुह्याय ॥ ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां तर्ज्जनीभ्यां ॥ नमः मध्यमाभ्यां ॥ नमः अनामिकाभ्यां ॥
ॐ ह्रां कनिष्ठकाभ्यां ॥ ॐ करतलपृष्ठाभ्यां ॥ एवं हृदयादि ॥ ॥ गणे
जलपात्रपूजा ॥ गायत्री ॥ ॐ ह्रां विद्महे वृहद धीमहि तन्नो देवी प्र
चोदयात् ॥ ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ ह्रांगुह्याम्पूजान्देयदेवत् ॥ मालिनी ॥
पञ्चवलि ॥ ॥ सर्वकादि देव ॥ गणमूलदेवीपूजनं ॥ आसन ॥ आधारश

क्रैं ठ॥ चतुर्द्दन्ध्रगजातनायर॥ ध्यानं॥ वज्रपाणिवनाहीति. हस्तम्यक्षमाः
म्बवाम्बवा। चतुर्द्दन्ध्रगमाकन्त्य ख्वयामसूहिविनय्यरा॥ ध्यानपूर्ध्वरा॥ स्र
वाहनादिपूष्य ॐ. ॐ अ लि॥ ॐ ॐ न्द्राल्येर॥ श्रीग्यु॥ ॐ न्द्रायनीदर्थेर
वलि॥ नमास्तुपूजा॥ वज्रायर॥ यामायर॥ वनायर॥ स्वरायायर॥ सन्वि
न्मरुयादि॥ नमाश्वावनलपूजा॥ ॥नमस्वच्छालपूजा॥ ॐ ह्रदयाय
ॐ न्द्राल्येसिरस॥ नमःसिखायै॥ नमःकवचाय॥ ॐ न्द्राल्येनत्रयाः

य॥ ॐ अस्त्राय॥ ॐ त्रिषट्कोणपूजा॥ ॥नमाष्टदलपूजा॥ वांवगलामु
र॥ ह्रीं छिन्नमस्तायेर॥ तीं तारायेर॥ दीं दक्षिणकालिकायेर॥ धीं धूमाव
त्येर॥ हीं हडकाल्येर॥ मीं महाकाल्येर॥ त्रीं त्रिपुरसुन्दरि वायेर॥ ॐ यन्त्रपत
पूजा॥ ॥नमाश्वहस्तीपूजा॥ ॐ न्द्रादि. वज्रादि॥ ॐ निम्नश्वर ॥ ॥ध्याः
वाश्च. वज्रमूडादि दशयत॥ थनमालक्ष्मीपूजा. फ्लान्नायादिनिर्वाणयर्ध्यं
नमाबलि॥ त्रिदनया॥ मूलवलि॥ नयँ नश्री वनिपँ एवामें ॐ न्द्राली किलि किल

कुञ्जकीवाकुञ्जकीवा यवीकृड्डिका ॥ अकरेनवाया लिपिसिनवलिं गृह्ण रस्वाहा ॥
वगला दियन्त छिनदेवी थ्यावलि गृह्ण रस्वाहा ॥ ऊर्ध्व अमृत थ्यादि ॥ ॥ धूप
दीप नैवेद्य ॥ जाप स्तिदेवया ॥ मूलया ॥ ह्रूं ह्रूंक्षा नमः स्वाहा ॥ १०८ ॥ स्तु
ति क्षमा ॥ पूर्ववत् ॥ विसर्जन ॥ स्तवपनि थियरा च्वाहृन्दचोयाको सिमाना म
मस्तुलना वास मुद्रा प्रदर्शन थाकन्या । हविदन विधि मूल्वा संस्तुना माद दली इ
विनसमलि सावंना ॥ गयन्की पूना ३ ॥ यथा वान ॥ योनि कान ॥ तर्पण ॥ यज्ञव:

९

लि ॥ वृकनस्नाय ॥ अकानक ॥ ऊर्ध्वपूर्व ॥ वलिं थ्याय ॥ न्यास लि काय ॥ माकि:
थाय ॥ यजमानस्य मान्त्रकन्दा यनी पूजा सं पूर्णार्थ झुल मु थ्याये ॥ निर्म्मा:
ल्य पूजा ॥ ओं भविकायेरथ ॥ ह्रूं लिक्षाय नी पूजा विधि ॥ ॥ ७ ॥ मन्त्र
मूल पूजा ॥ नासिय ॥ अद्य यजमानस्य मान्त्रकावा मृत्युंजय निमित्यर्थ झुमान्त्र
यर ॥ अद्य स्वस्ति अनुज्ञा दिस्र ग्रहान्व बन्धना न्दपूर्ववत् ॥ तत्र प्राणायाम ॥ मात्र
कान्यास ॥ योनि न्यास ॥ तमा मूलमन्त्र अष्यादि न्यास ॥ अनामलस्यव स्म विष्णु
मह कवनाम षिरयार ॥ निरं ॥ नायत्रुद्धि गन्हू पुन्दाया रथ ॥ मुद्रा ॥ [illegible]

का का ली महा लक्ष्मी मूला सन त्व स्वमी दव मास्या नमः॥ हृ
दि॥ दूरुक्रि मन नकद्र त्रिकाबीज स्या २॥ कृस्रो॥ नन्दा॥ करतनी शम
शक्ति स्या २॥ याद स्यां॥ लघ कीलकाय शास्तवाक्य॥ ॥ नमः वज्रउक्ष
सी॥ त्रं ह्रां ह्रीं सूक्त्राय॥ त्रैं ह्रौं ह्रीं स्रु गुष्ठाभ्यां॥ वामूर्धायै गर्जनीभ्यां॥ विश्व म
ध्यमाभ्यां॥ विश्वघ्न नामिकाभ्यां॥ वामूर्धायैक निष्ठकाभ्यां॥ वं ह्रौं ह्रौं कर
तलपृष्ठाभ्यां॥ वं वं हृदयादि॥ ॥ नमः वक्र न्यास॥ ॐ वं नमः॥ ब्रह्मर
न्ध्र॥ ॐ ह्रां २॥ दक्षनेत्र॥ ॐ ह्रीं २॥ वामनेत्र॥ ॐ वां २॥ दक्षकर्ण॥ ॐ मं २॥

वामकर्ण॥ ॐ सुं २॥ दक्षनासापुट॥ ॐ यं २॥ वामनासापुट॥ ॐ विं २॥ मु
खे॥ ॐ हूं २॥ स्वाधाय॥ ॐ त्रि व्यक्ष न्यास॥ ॥ नमः जलपात्रपूजा॥ गाय
त्री॥ ॐ वज्रसत्त्वाय विद्महे ह्मगी देवी धीमहि तन्नः सत्त्व गुह्य प्रचोदयात्॥ ॥ सू
र्य्यार्घ्य॥ ह्रां गुरु पादुका पूजा॥ पंचोपचार॥ मालनीयं चचली॥ सं वर्णं दिति
देव पूजा॥ ॥ नमः मूलदेवी पूजा॥ आसन॥ स्वाधा पनकेन॥ प्रणासनाय श्रीमां २
२॥ ध्यानं॥ नमः देवीतत्र्यं ध्याय॥ कालिकाध्यानमूत्तनैर्द्दशहितं दशान्या
दी दशहस्तां विविधास्तुगां॥ ॐ इन्दुनील पूर्तिभ्रम, चक्षुं गर्वं नित्यं कनान्॥

दक्षहस्ते खड्गधत्तां, गदां शूलं तु मुण्डिकां ॥ यमदिग्घां च धनुर्वामे, ईश्वतां
त्रुक्षसेतु मां च मधुकैटभनाशार्थं, तामसीं कालीं शिवदूतीं ॥ ध्यान ॥ महा
लक्ष्मीं, महिषासुरमर्द्दिनीं ॥ समस्तदेवतानां तेजोजातां यमालतनूं हि मां ॥
अष्टादशभुजामन्त्र, मालान्यम्बुजसायकान् । खड्गं वज्रं गदां चक्रं दण्ड
कमण्डलुं ॥ शंखघण्टा धृता वामे ॥ शक्तिं ... धनुं ॥ चर्म्मदण्डो
पाशं, घण्टापाशं त्रिशूलकं ॥ ... ॥ ध्यान ॥ ... समन्वितां ॥ न
शंखमूसलं चक्रं, शालीनक ... दधती ॥ घण्टां शूलं हलं चापं, वामह

स्तैर्बिभ्रतीं, ... नृणामानन्ददायिनीं ॥ ...
जगत्सर्वं शुम्भादिकविमर्द्दिनी ॥ ...
ध्यानपूर्वं २४ ॥ आवाहनाद्युपचारान् ॥ ॥ ध्यान ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डा
यै विच्चे ३ ॥ ... चामुण्डायै ३ ॥ ३ ॥ बलि ॥ मातृपूजा ॥ खड्गाय २ ॥ वज्रा
य २ ॥ शंखाय ... २ ॥ त्रिशूलाय २ ॥ गदायै २ ॥ मूसलाय २ ॥ मुण्डिकायै २
परिघाय २ ॥ धनुषे २ ॥ ... ॥ ॥ मालायै २ ॥ पद्माय २ ॥
सायकाय २ ॥ खड्गाय २ ॥ चक्राय २ ॥ गदायै २ ॥ चक्राय २ ॥ कमण्डलवे

शं॥ शीस्वाय २॥ गर्द्धै २॥ यवगवर २॥ धनूष २॥ वर्म्माय २॥ दक्षाय २
हूवापाशाय २॥ घीभये २॥ याणाय २॥ त्रिशूलाय २॥ ॐ नि महालक्ष्मी॥
शीस्वाय २॥ मूशलाय २॥ वज्राय २॥ याणाय २॥ घण्टाये २॥ शूलाय २॥
हलाय २॥ वायाय २॥ ॐ नि नवत्वया॥ ॐ ग्यासु पूजा॥ ॥ तस्मिन्मध्ये
ग्यादि॥ ग गास्थवनग पूजा॥ नगषट्कोण॥ त्रैं ह्रां ह्रीं हृदयाय॥ वामूर्ध
ये शिरसे॥ विह्वं शिखायै॥ विड्ड कवचाय॥ वामहाये नेत्रत्रयाय॥ः
त्रैं ह्रौं ह्रीं अस्त्राय फट्॥ ॐ नि षट्कोण पूजा॥ ॥ गगा अष्टदल पूजा॥ ऊँ

जयायै २॥ वीं विजयायै २॥ अं अजितायै २॥ ॐ अपराजितायै २॥ जं
जम्भिन्यै २॥ स्तं स्तम्भिन्यै २॥ मों मोहिन्यै २॥ ॐ आकर्षिण्यै २॥ ॐ नि अष्ट
दलपूजा॥ ॥ गगा त्रिकोण पूजा॥ श्री श्रियासहित विष्णवे २॥ उं उमास
हित शिवाय २॥ मों महिषविदा विनाशिन्यै २॥ ॥ ग गा चतुर्पूजा॥
नं नन्दायै २॥ वं वक्रदन्तिकायै २॥ गं गाकम्भर्यै २॥ दां दुर्गायै २॥
शीं शीमायै २॥ भ्रां भ्रामर्यै २॥ सं स नवग्रहे २॥ ॐ नि षट्दल पूजा॥ ॥
ग गा षोडशदल पूजा॥ ब्रां ब्राह्मी २॥ मां माहेश्वर्यै २॥ कौं कौमार्यै २॥ वैं वै

सूक्ष्मेश्वरा॥ वँ वाचाध्यक्षेश्वरा॥ नँ नारसिंहेश्वरा॥ सँ सूचन्द्रजायेश्वरा॥ वँ वा
मूत्तायेश्वरा॥ ॐ महापद्मपूजा॥ ॥गगनस्थविहगपद्मपूजा॥ वँ
विष्णुमायायेश्वरा॥ वँ वृद्धेश्वरा॥ नँ निद्रायेश्वरा॥ क्षँ क्षुधायेश्वरा॥ तृँ तृष्णाया
येश्वरा॥ मँ म[illegible]श्वरा॥ यँ यीयूनायेश्वरा॥ भँ भूसूक्ष्मायेश्वरा॥ दँ दानंदेश्वरा॥ जँ
जायेश्वरा॥ लँ लक्ष्मायेश्वरा॥ ऐँ ऐश्वर्यायेश्वरा॥ कँ कालीयेश्वरा॥ सँ सौम्यायेश्वरा॥
दँ दयायेश्वरा॥ उँ उत्कटेश्वरा॥ यँ यूथेश्वरा॥ मँ मानवायेश्वरा॥ ज्वँ ज्वाला
रा॥ ॐ लिपस्कविहगपद्मपूजा॥ ॥गगनस्थकौलपूजा॥

[illegible]
गँ गगनयनयेश्वरा॥ वँ वटुकायेश्वरा॥ यँ यामिनिश्वरा॥ ॐ लिप
उत्कामहपूजा॥ ॥कमलसूत्रासनपूजा॥ ॐ आदि रेखादि॥ अवा
वाहनकाशेमूदिसर्गपर्यन्तु॥ थनामात्रकापूजा॥ षडाम्नायादि
निर्वाणन्तं॥ ग्रभावलि॥ उँद्वयावलि४॥ मूलवलि॥ गँ यँ लँ नँ वँः
सौँ एकात्मकौठावायी वामूल्तु कालनाथ्रिरि॥ यिकाक्षी वँ वीक्षा
त्रिकाउन्दरी नवालिवलिं गृह्णन्तु स्वाहा॥ जयादियन्त्रं क्षिरि ग
दूवायावलिं गृह्णन्तु स्वाहा॥ उर्द्धवक्त्राविन्यादि॥ ॥धूप॥ दी

य, नैवेद्य ॥ मण्डलजप ॥ शिवध्वया ॥ मूलया ॥ ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डायै
विच्चे स्वाहा १०८ ॥ ॥ गुह्यातिगुह्यादि ॥ स्तोत्र ॥ क्षमन ॥ अग
ह्रिताननवच्छक ॥ चामुण्डा ध्यानम् ॥ यायच्चशिववनिपातः
हासा विरूपा, लक्ष्मी वाला यरदा शिवयपूर्णगुणा सर्वकानन्दना
जीवयषांवना सर्ववाङ्ग्निविधि विधत्तुल्या दावकीर्त्तिपूर्व, गं
षांनियंरावज्ञय जिनि ध्वित कलानन्दवा ध्यवाधं ॥ यायांहमि
त्यादि ॥ यीवह्नव ॥ तर्प्पण ॥ यगुवस्यादि कीत्तपूर्व्ववत् ॥ एकान

कासमयादि ॥ ॥ अथ पूर्व्व ॥ वलिध्याय ॥ न्यास ॥ सांकृथाय ॥
जयमानस्यमातृका चामुण्डायूजासम्पूर्ण थंकूलमाल्हुयाय २ ॥
निर्म्मालयपूजा ॥ लषिकायें २ ॥ ३ ॥ ॐ जि चामुण्डायूजाविधि ॥
॥ ७ ॥ मनामहालक्ष्मीपूजा ॥ नालिय ॥ अथ, यजमानस्यमातृ
कामहालक्ष्मीपूजा निमित्त थंकूलमाल्हुयाय २ ॥ अस्वलुमण्ड ॥
त्राद्यानवबन्धनं कुर्यात् ॥ प्राणायामः ॥ मातृकान्यास ॥ पीठन्यासः ॥
मूलमन्त्र सषादि न्यास ॥ अमुष्यमन्त्रस्य गुजपये २ ॥ जि २ ॥ नि:

हृद्वन्दसरां॥मूस्वा॥कमलादेवतायै रा॥हृदि॥ऐं ह्रीं श्रीं बीजायै स्वा॥
हा॥ह्रीं कीलकायै २॥यादथाः॥सर्व्व सम्पत्प्राप्तये विनियोगाय
शा॥सर्व्वाङ्गे॥ ॥गणेशन्यास॥ऐं ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥भा
ऊँ ह्रीं श्रीं गुह्याभ्यां॥श्रीं तर्ज्जनीभ्यां॥ह्रीं स्तनाभिकाभ्यां॥श्रीं कनिष्ठा
भ्यां॥ऐं ह्रीं करतलपृष्ठाभ्यां॥एवं हृदयादि॥ ॥जलयात्रपूः
जा॥गायत्री॥ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, महालक्ष्मी धीमहि, तन्नो लक्ष्मीः
प्रचोदयात्॥सूर्य्यार्घ्यपूजा॥हृद गुरुध्यानपूजा॥मालिनी॥

आवाहनादि अञ्जलिपर्य्यन्तं पूर्व्ववत्॥गणपत्यादि बलि ४॥सम्वर्ण
दि देवपूजा॥ ॥महालक्ष्मीदेवीपूजनं॥आसनपूजा॥आधार
शक्तिपुष्पिकासनाय २॥पद्मासनाय २॥ध्यानं॥वन्दे लक्ष्मी कनि
लि, घनेश मनिमयकुम्भा॥माला लिखितमानाम्बरत्नाला, पद्मं हेमनवना
रत्नं॥पद्मध्वजकरेषु, विभ्रती नृपसंविता॥ध्यानपुष्पं २॥पा
द्यार्घाचमनीयादि पुष्पपर्य्यन्तं दद्यात्॥ ॥पञ्चबलि॥ऐं ह्रीं
श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै पादुकां॥३॥गं गीं गूं गैं गौं गः महालक्ष्मीदेवी

३॥ त्रिधा त्वलि॥ ॥नमो मातृपूजा॥ वज्राय २॥ सूर्य यायर॥ य
ग्माय २॥ पद्माय २॥ ॐ अष्टपूजा॥ सन्धिन्महस्या दि॥ आवरनपू
जा॥ ॥ह्रां ह्रीं हृदयाय॥ ह्रीं शिरसे॥ ह्रूं शिखायै॥ ह्रैं कवचा
य॥ ह्रौं नेत्रत्रयाय॥ ह्रः अस्त्राय फट्॥ ॐ षडङ्गपूजा॥ः
गं गणपतये २॥ दं दक्षे॥ ॥नमो मातृकापूजा॥ उं उमायै २॥ श्रीं श्रियै २॥
मां सरस्वत्यै २॥ दीं दुर्गायै २॥ दां देव्यै २॥ उं उषायै २॥ ॐ मातृ
कापूजा॥ ॥क्षें क्षेत्रपालाय २॥ नं नन्दिकेश्वराय २॥ वं वरुणाय २॥ पा

र्थिव॥ ॐ दि॥ ॥नमो द्वादशराशिपूजा॥ मं मेषाय २॥ वृं वृषाय
२॥ मिं मिथुनाय २॥ कं कर्कटाय २॥ सिं सिंहाय २॥ कं कन्या
यै २॥ तुं तुलाय २॥ वृं वृश्चिकाय २॥ धं धनुषे २॥ मं मकराय २॥
कुं कुम्भाय २॥ मीं मीनाय २॥ ॐ द्वादशराशिपूजा॥ ॥सूं
सूर्याय २॥ सों सोमाय २॥ अं अङ्गारकाय २॥ बुं बुधाय २॥ बृं बृहस्पत
ये २॥ शुं शुक्राय २॥ शं शनिश्चराय २॥ रां राहवे २॥ कें केतवे २॥ जं
जन्मने २॥ ॐ नवग्रहपूजा॥ ॥नमो दिक्पालपूजा॥ इं इन्द्राय वज्रा

यर॥ यँ कुलनी कायर॥ वँ वामनायर॥ कँ कुमुदायर॥ ह्रूँ अञ्ज
नायर॥ यँ पुष्पदन्तायर॥ सँ सार्व्वभौमायर॥ सँ सुप्रतीकायर॥
ॐ स्वस्ति दिग्गजपूजा॥ ॥ नवग्रहपूजा॥ ॐ ब्रह्मादि नवग्रहाः
दि॥ आवाहनं विसर्जना॥ ॥ थन मालकापूजा॥ षडङ्गन्यासादि
निर्व्वाना कं पूजयत्॥ ॥ नवावलि॥ त्रिदवया॥ मूलयावलि॥
गमं ८ श्रीदवीस्मो ८ पूजा ४ महालक्ष्मीसाधनी. ॐ ह्र क्लीं
नी. क्रुद्धि कामुकसेन वालि पिशितवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ गनपत्या

दिय न्क्रुं ह्रिं गदवदवात्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ गुरुभ्यो गुरुभ्य स्वादि।
ब्रह्माण्यु स्यादि। मन्त्र जप॥ त्रिदवया॥ मूलजप॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रीं स्वाहा॥
१०८॥ ... स्वाहा॥ ... गुरु ... आदि। स्तोत्र॥ ... मन्त्र स्वाहा॥ ह
स्वकी॥ ... श्री ... आदि। ॐ ऐं ह्रं दयाय॥ ॐ ... नमः॥ ॐ नि:
स्वायेरे॥ क्रीं ... ॐ ... ॥ ॐ जीं ॐ क्लीं॥ पद्मासनः
ह्रिगगु ... नाकाना. ... मस्तु जगत्तां ... नाली॥ पद्म

ल्यापन्नलिवादित पालश्चग्री. हापाङ मांविवि धरूखदालूब न्म घ्या।
पापाहमिस्यादि॥ पी०ल्हवा॥ गर्ध्व ना॥ पञ्चुयल्यादि कि पूर्वेब्रेतू॥ न्रका
न का॥ अम्व॥ वलिस्थय॥ न्यास॥ नाहिय॥ ह्लादि थमा॥ यजमानस्य माए
का मनालक्ष्मी पूजार्थं पूर्णार्थ फल मार्ल्लजुअयर॥ निर्म्माल्य पूजा॥ ०वि
कार्येथ स्व्रति महालक्ष्मी पूजा। [illegible] ॥गणावतुकपूजा॥ नाहिय॥ अः
घ्य॥ यजमानस्य माएका वटुकपूजा निमित्यर्थ फल मार्ल्लजुअयर॥ अर्द्धिनस्या

गुरु
दि॥ अम्वलुमलुलादिदशद्वानवध्वनं॥ ततस्थ्या॥ न्याम ऐं मा ए कार्न्य
स ४॥ पी०न्यास ४॥ मूलमन्त्रअष्यादि न्यास ४॥ अस्य मन्त्र ब्रह्म ऋषि
ये नम ४॥ निवसी॥ गायत्री छन्दसे नम ४॥ मुखे॥ नुरोदेवता थि र॥ हृदि
र्दु बीजाय र॥ काभु॥ व्रं शक्तये र॥ पादयो ४॥ ग्लौं कीलकाय र॥ सं
र्व्वाङ्गे॥ ऽं तिमिश्रादिन्यास ४॥ ततः षडङ्ग न्यासो॥ वं अंगुष्ठाभ्यां॥ वं नः
र्ज्जनीभ्यां॥ हूं॥ ईं मध्यमाभ्यां॥ वैं अनामिकाभ्यां॥ नें कनिष्ठकाभ्यां॥ मंक
रतलपृष्ठाभ्यां॥ ऽ वं हृदयादि॥ ॥ गंगाजलपात्रपूजा॥ गयत्री॥ का

ह्रीं कार्याय विद्महे. गिरिसुताय धीमहि. तन्नो गुह प्रचोदयात्॥ ॥
तर्पणं॥ अर्घपाद्य पूजा॥ गणेश गुह्याल पूजा॥ मणिनी॥ आवाहनादि
पुष्पाञ्जलि पर्यन्त पूर्ववत्॥ गणाध्यक्ष बलि॥ समन्तादि दिव्यदेव पूजा॥ त
ताम्बूल देव पूजा॥ आसन पूजा॥ आधार शक्ति पृथिव्यासनाय नमः॥ मण्डूका
सनाय नमः॥ ध्यानं॥ ध्याये देवं गुहं गणं कि.कु क्री ट कुसुमान्वित नूपुरं नक्कान
कौस्तुभ कान्त कनक प्रसून कल्प हरिविप्र॥ ध्यान पूजा नमः॥ आवाहनादि पु:
ष्पादि कं दद्यात्॥ पुष्पाञ्जलि॥ ॐ वक्रतुण्ड नमः॥ वक्रकायाय नमः २॥ ओं क्री

कुल पुत्र वृहत्कनाथाय नमः॥ शिवा॥ तन्मात्र पूजा॥ लक्ष्मी र कृष्णा
यै नमः ॐ स्कन्द पूजा॥ ॥ समन्ताय स्वादि॥ आवरण पूजा॥ गणाध्यक्ष
ल पूजा॥ वं वक्रतुण्डाय नमः॥ वं निम्न सखा हुं लिखायै नमः॥ वं कवचाय नमः॥ नेत्र
त्रयाय नमः॥ मं महोल्काय नमः॥ इति षडङ्ग पूजा॥ गण ध्रुवपत्र पूजा॥ ॐ गण:
न्याय नमः॥ कं भ्रिकण्ठाय नमः॥ कं कृत्तिकाय प्रजाय नमः॥ लं लम्बोदराय नमः॥ सं सेना
न्ये नमः॥ गं गुहाय नमः॥ हं हिरण्य [illegible] कुमाराय नमः॥ वं विघ्नराजाय नमः॥ [illegible] पत्र
पूजा॥ ॥ गणेश पूजा॥ [illegible]॥ व [illegible]॥ आवाहनादि तर्पणी

२

मृत्राद र्नयं ॥ थनं ... ॥ ष्ठाम्नाग दिनि र्द्वनिमन्के पुजा ॥ व
लि ३॥ तिंदवया ॥ मूलवलि ४॥ श्रीं क्रीं कुल पूत्रय वटुकनाथा यालि थिपि
नेवलिं गु क्रं स्वाहा ॥ जयन्ता दियन्के हि ग दवलेस्वा वलिं गक्रं स्वा
हा ॥ ऊर्द्ध वक्त्रा गुल्याति ॥ म गुल जय ॥ तिदवया ॥ मूल ॥ ऊँ कव कुव
नमः स्वाहा ॥ १०८ ॥ शुक्राति ॥ श्रोत ॥ ऊर्द्ध गुमनु ला ॥ सम्व ह्रीं ॥ तिदं
वया ॥ तिन्द्रन वन्दनादि वितकथा लविम्व . मूलि कर्त्तुप्र ग गल धगा
लि मालं त्र वन्ह लाम हव न न नंद्रपथ . मूलनाजन दिनान नमास्थि

श्री ५ ... ॥ ५०

कयं ॥ वटुकनाथस्य वा नप्रदायी . ललि ग द ह ध्रुतिका कन दप्रस्व
३॥ निवसू गद्द निगवि वा नी . ममद्द नि गीं हन गुगुह न ४॥ पाया ह भिया
दि ॥ पीठस्व ॥ गर्थग ॥ पञ्चवल्यादिकं पूर्ववत् ॥ वुकन च्छाय ॥ त्र
कानं क ॥ ऊभ्य ॥ वालि ४ थय ॥ न्याम ॥ नोहिय ॥ साक्षि थय ॥ यज :
मानस्य मा न का वटुक पूजा सम्पूर्ण थिं कुलमार्ग उयर ॥ निर्मा
ल्य पूजा ॥ वंदे गुत्व नायर ॥ ३ ॥ इति वटुकपूजा विधि ३॥ ५॥
नना योगिनी पूजा ॥ नाति य ॥ नैवे ॥ यजमानस्य मानका योगिनी पू

शानिमित्यर्थं कुल मार्गे शुद्धाय स्वाहा ॥ अर्चितमित्यादि ॥ स्वखड्गमन्त्रेणाः

दिद्गबन्धनं ॥ ततः षडङ्गन्यासः ४ ॥ मातृकान्यास ४ ॥ पीठन्यास ४ ॥

मूलमन्त्र ऋष्यादिन्यास ४ ॥ अस्य मन्त्रस्य छन्द [illegible] नवसषय ऋषि गा

यत्रीछन्द स्वयम्भू योगिनी देवता य स्वाहा ॥ हृदि ॥ ह्रूं बीजाय स्वाहा ॥ क्लों

[illegible] शक्ति कीलकाय स्वाहा ॥ सर्वाङ्गे ॥ ततः [illegible] क्रूं [illegible] कुष्ठि:

ना ह्रूं गुह्यकाल्यां ॥ क्रूं त्रैलोक्याकर्षिणी ह्रीं नीलायां ॥ क्रीं कामाख्या

यिनी मध्यमायां ॥ [illegible] अनामिकायां ॥ [illegible] करतल

पात्रपूजा ॥ गायत्री ॥ कुष्ठिकायै विद्महे कुलद्वीपायै धीमहि ।

तन्नो कुष्ठि प्रचोदयात् ॥ ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ [illegible] गन्धपुष्पसमन्वितः

मालिनी ॥ आवाहनादि पुष्पाञ्जलि पर्यन्तं पूर्ववत् ॥ ततश्च [illegible]:

बलि ४ ॥ समयादि त्रिदेवपूजा ॥ ॥ ततो मूलदेवीपूजा ॥ आसन

पूजा ॥ ॥ आधारशक्त्यै कम्बलासनाय स्वाहा ॥ सिंहासनाय स्वाहा ॥ ब्रह्मप्रे:

तासनाय स्वाहा ॥ विष्णुप्रेतासनाय स्वाहा ॥ रुद्रप्रेतासनाय स्वाहा ॥ ईश्वरप्रे:

प्रेतासनाय स्वाहा ॥ सदाशिवप्रेतासनाय स्वाहा ॥ ह्रीं स्वाहा वह्निप्रेतास

१पोथी अर्ज्जुन[illegible] ॥



नायरसाध्वनें॥ायभ्रसिंहासनादेवी. ज्वाद्विमनागिनीय बज्रकु
जेधनादेवी. चिन्दकोपालधनिनीवादयारायकनयूका. सर्व
लंकानभ्योतिनावतिनजाकुविदेवी. ध्यायमा नाचयागिनिसि
ध्यनपूर्ध्वनमः॥ ॥आवाहनादिपर्ध्यदज्ञानु॥ ॥गुणुकुलि
॥यांयागिन्धेयादूकी॥ सधपूनक्ष्मु कुलि॥ अर्घ्या॥ वज्रावि
लीलि॥ हेकानवासकान॥ ॥तीनाक्षुपूज्ञा॥ विन्दुयर॥ कया
लोशा॥ वनायरा॥ श्रयायरा॥ ॥सचिमध्याख्या दि॥ लनाआव

ननपूजा॥ ॐवज्रकुक्कि न... यायसाधूं लाक्काकर्षनी
लिनसस्वाहा॥ ॐकाम भक्राविनालि खाधे पुष्टु॥ ॐ श्री
महाक्रारकानिणीकववायहूं॥ ॐ धौं नरुपयायबीछेलास्वकु
क्षायहूं॥ ॐ तिबद्धासपूजा॥ ॥मेनक्रिकानपूजा॥ ॐ ह्रूंम
हामायाकेक्किकतिविद्यावेक्रान्ध्वनीयादूकीं॥ वाम॥ ॐ अर्घ्या
ॐज्रः ॐ न्मगलाधियमयेक्रियालक्रियनायोनिध्यीलमन्दनीदेवी
पायूहूं॥ ॐ पनमधायंघानन्पक्षीं घानामरवीरीमसीबला॥

वमरपिवररर नमरस्वरु ऐं क्रूं ऊँ स्हूं ऊँ क्रूं ग्रीं स्हूं ऊँ विश्वानल
षिवतयग्रा नमक्कि पवापमाययेनि श्रीं किलकालादेवी पादुकां॥ ॐ
॥ ॐ ह्रूं सिवगलाषिपनय ॐ ह्स्लालकि अपनायेनि श्रीं नवष्ठि
देवी पादुकां॥ मध्य॥ ॥ नमस्ति कालवाक्ये॥ ॐ जयेश॥ ॐ वि
जयायेश॥ ॐ अजितायेश॥ ॐ अपराजितेश॥ ॐ जम्भिन्येश॥ ॐ स्तम्
भिन्येश॥ ॐ मोहिन्येश॥ ॐ आकर्षिण्येश॥ ॐ त्रिपुरकाल पू
जा॥ नमस्त स्वच्छपूजा॥ ॐ ऐं ऊँ ब्रह्मणीगरोन वायस ऊँ ब्रह्माणी

नमक्कि सहितायर॥ ॐ ईं ऊँ रुद्राणीसेन वषभ कंमारुन्य वीनमक्कि स
हितायश॥ ॐ ऊँ वैष्णवीरोन वायर्व कौमारी नमक्कि सहितायश॥
ॐ मं मूं ऊँ आप रौनवायर्व वैष्णवी नमक्कि सहितायश॥ ॐ ऊँ ऊँ नम
लरोनवायर्व वाराही नमक्कि सहितायश॥ ॐ ऊँ कपालीरोनवायर्व
ॐ ऐन्द्री नमक्कि सहितायश॥ ॐ ऊँ ऊँ सोमवरीनवायर्व चामुण्डा
नमक्कि सहितायश॥ ॐ ऊँ ब्रह्मसिंहा नवायर्व महालक्ष्मी नमः
क्कि सहितायश॥ ॐ ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं पूजा॥ नमस्ति कुलपूजनं॥ ॐ

सत्वायश॥ वैं वजस्तुश॥ गं गमस्तश॥ ॐ त्रिपुरसुन्दरि पूजा॥ ॥गगम्ब
गुरुक्षा न पूजा॥ क्षां क्रतुपालायनम॥ गं श्री कुलगणेशनाथाय
॥श्री क्री कुलपूजवटुकनाथायश॥ यां योगिन्येश॥ ॐ त्रिपुरगुरुक्षा न पू
जा॥ ॥गगग कुलेश पूजा॥ लूं इन्द्र॥ रूं अग्नि॥ मूं यम॥ क्षूं नैरृत॥
वूं वरुण॥ यूं वायु॥ सूं कुबेर॥ हूं ईशान॥ अं ऊर्ध्व॥ ह्रूं क्ष्मां वज्रा
दि॥ ॐ त्र्यक्षस्तूलगेपूजा॥ ॥गगग क्षेत्रपालादि पूजा॥ ॐ क्षेत्रपालायश॥ ऊँ
अम्ब॥ श्रीकदम्ब॥ ऊँ नन्दनवनेनम॥ क्षौं पादुकाँ॥ वाहनादि

यानिमर्ड्ददर्णयपू॥ ॥पनमान क्षादक्षा॥ वजमायादिनि र्बी ल
लं वू पूं जयपू॥ गगा वलि ४॥ शिवदवया॥ मूलवलि ४॥ यां यीं यूं यौं
योगिन्यै वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ऊँ निरवास क्षुद्र दैव वालिपि वुं
लिगवलिंगृह्न २ स्वाहा॥ ऊँ कृशि कार्ये वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ महा
मायादिय क्षुल्लिगदवद वौल्या वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॐ ॐ ब्रह्माण्या
दि॥ मङ्गलजय॥ शिवदवया॥ यां स्वाहा॥ क्षौं मूँ स्वाहा॥ १०७॥ गुरुक्षो
गिगुरुक्षलादि॥ क्षात्र॥ अस्व ॐ मनु लौ हैं ला॥ सखाँदि

दव या॥ मासो स दानि स दा पन म प द कं था व ड त्ले लासन ह्या. व्रु
ह्मा विह्मू म्ब न्ड ॰ स क ल ख ग मृ त्मे हू गानि त्य ख नं ल्ह्म ग ह्मा सा दे
हग्न त्रु व न मृ ग ह व त्ते वा य हू स्त्रू बा ल ॰ म्या मां नृ त्मा श्री प्र न म
तिन व नी ह्रिङि सो नी म ना थ॥ आ का न द न नि ह गे क प दा नावि
ना मृ त्रि ड वि द्रु म दि या कन दी क द ही॥ श्री यो गि नी म मृ ग न त्मि:
वि वि त कं र्भं प्र णा ह्रि गा त्र व न ला म थ रा व या मि॥ व जा दि या
गि नि प द द्व य मा द त्रे न. य स्स व गा स वे रा व ल्स क ला ग म ह्रू॥

वा गी ख ना प्र दि न त्रु क म ला ल या व. न स्य मृ ह स क ल तू व ति
मा न यें कि॥ या या ह मि स्या दि॥ पी॰ हू वा॥ ति र्थ ला॥ प त्रु प ल्या
दि कं त्रु पू र्वं व न्ना त्र का न का॥ सम्या॥ व लि त्मा य वा॥ व्यास॥ नी
ति य॥ सा हि त्म यें॥ य ज मा न स्य मा ट का यो गि नी पू जा स म्यु र्णु
र्थं कु ल मा र्ग स्थ य न म॥ नि र्म्मा ल्य पू जा॥ ॥ ॐ ड ह्नि छे वी सु
ति र्थे रा २॥ ॐ श्री यो गि नी पू जा वि धि॥ ॥ कु ह स दा गि व य ग्रः
ह व ख गी. क्रू ह व म म ति न ल्य प्र ता म गी॥ ग दि ह क्रू य मु ना प्र व

मल्लानीं समवलाक्यवृक्षनवद्व्यागि॥ ॐ नि श्री श्री राक्ष्न मल्ल
प्रियसविवमनोनथरिहकाविगद्धिजवयगंगाक्षवक्ष्णिसमू
र्त्तव्य गतन्मदिमाप्टर्ष्वनपड्ढ निक्ष्माफभ ॥ ॥ॐ

१ ॐ नमस्त्रिपुरकायै॥ ब्रह्माणीब्रह्मसावित्री ब्रह्मगलवि
वेदिनी॥ चतुर्मुखचतुर्वक्त्रचतुर्वेदपरायणी॥ चतुर्द्दः
गदिर्णश्चाष्का. चतुर्युगपरायणी॥ हंसयुक्तविमानस्था सो
म्यरूपाविनामही॥ पूरककंजपमाला ॐ. ववदारायपानि

नी॥ पीतवस्त्र नगांदेवी. पीताक्षी पीतवासमा॥ पीताल्यहावसीनु
ष्ठा. पीतगन्धानुलेपिनी॥ डम्बरगालावल्मा प्रयागदेवतावासि
नी॥ पूर्वपा॥ हिमानिलं. ब्रह्मकन्किनमामुग॥ ॥ माहेश्वरी
महादेवी. महामायानिरंजनी॥ महावृषसमारूढा॥ महाहुंकारनना
दिनी॥ हमभूधिनिरंदहा. कपालीमनिजषेनी॥ त्रिलोचनी त्रि
शूलश्च. ॠकमालाकमण्डलू॥ नागालंकालसर्वाङ्गी. दक्षिणेन व
नस्थिता॥ शुद्धस्फटिकविनाशानीं. सर्वव्यापिनमेश्वरी॥ स्वतपूष्ठ

ब्रर्नांदेवी. ज्वमाम्नी ज्वनवासला । ज्वगवन्दनलिकाली. मूकारान्
लल्लु ष्ठिता ॥ वावानख्यामहाक्षेत्र. पालवृक्षा निवासिनी । स्मशानस्थित
ह्निताया ०. माहेश्वरीनमोस्तुते ॥ २ ॥ बालत्रावमहागौरी. कौ
मारीवकलोचनी । नक्रवक्त्रयवीधाना. सिन्दूरारुणविग्रहा । च
तुर्भुजागक्लिनुलं. सिद्धियात्रधवीलुता । कौमारीयवमंगकिम
यूरवरवाहनी । नक्रवक्त्रयवीधाना. नक्रमांसावसाशिनी । का
लापूर्थ्यामहाक्षेत्र. वटवृक्षनिवासिनी ॥ यामयायी ० ह्निताति
र्थं. कौमारीं नमोस्तुते ॥ ३ ॥ वैष्णवीविष्णुमायाख्या. देवदेवनन्दि
नासिना । हरिविनख्यामवर्णनी । गरुडोपविस्थिता ॥ शंखचक्रगदा
हस्ता. चतुर्बाहुविहृषिता । नतवालामहाक्षेत्र. नानाररवरत्नषि
ता ॥ हरिविनपूथगन्धव्यूह. सदाहरिविनधारिणी । स्वर्णमर्यंवयाना:
ले. ह्नितिनृपहस्तंह्निता ॥ स्पृष्टहाममहाक्षेत्र. कदंबवृक्षवासिनि
मीषष्क्रियी ० नेअर्थं. नारायणिनमोस्तुते ॥ ४ ॥ वाराहिघोरव
कामी. नककंणीमहादेवी । उग्राकरालगम्भीरा. वालाक्रस्थ

निरञ्जना ॥ कपालमालिका माली, विचित्रपुष्पशोभिता । महासिद्धि
समावृता, ज्वालिताग्नि समप्रभा ॥ स्त्रीनां कुलकल्पदं शुभा, हाजारनल
रुषिता । त्रिनयन ज्वालिता देहा, दुष्टदैत्य विनाशिनी ॥ जयन्तिकायां
स्थाने, नित्यवृक्ष समाश्रिता । नागपी ठिह्रिता नित्यं कालवृषिनमो
स्तुते ॥ ७ ॥ ॐ मध्वनी महलक्ष्मी, कुङ्कुमावृत विग्रहा । सर्व
नीलवर्णा देवी, सर्वालंकारभूषिता ॥ चतुर्भुजा विलोकी, सूर्यघण्ट
विधायिनी । महावज्रधरा देवी, त्रिनेत्रा वरदाभयं ॥ नानापुष्प
वरादेवी, नानावस्त्र विभूषिता । नानागन्ध विलिप्ताङ्गी, नानावस्त्र
विलासिता ॥ विचित्र महापीठं, कदम्बवृक्षवासिनी । वायुपीठे
स्थिता नित्यं, ॐ श्वनीनमास्तुते ॥ ८ ॥ चामुण्डा चण्डिका चण्डी, चण्ड
वर्णं शुभ्र विनी । चण्डहस्ता चण्डमुखी, चण्ड चण्ड नादिनी ॥ डमरु
कपाल खट्वाङ्गी, पिङ्गकेशी कृशोदरी । कृष्णाङ्गी रौद्ररूपा घोरी,
त्रिकाल लम्बोदरी ॥ महाप्रेतासनारूढा, रुण्डमुण्ड हिरण्यमाला
नामूषित चर्मयुगा हस्ता, दिग्धस्तु गन्धा विनी ॥ कर्तृ कपाल

स्नाव, ववपारायरु हिमा। नवर्वर्ण्ण वृमादेवी, प्रागुवर्ण्ण कटीवृ
मा॥ मृतुमालाध्वबा बोडी, शुक्लारवनरु ष्टिमा। हाउालीकावस
र्व्वाम्नी, श्रूलिरु स्तुमदाचिया॥ सदृष्टयर्त्ते कार्त्ती शमक्षू यंत्र
मित्रमिवज्ञालामालाकूलादहा, गडिक्षीटिमनप्रहा॥ कृकपृ
र्द्धमिवाधाना, त्वानवायमनादिंगा। रुनवगालजाकिन्य४यवि
बावाववाद्रुमी॥ एकाम्रकमहाकृप, शुभ्रस्कृवृदवासिनी। यी
ऽभ्रूववर्सस्थन, वामूलुवनमानुग॥ ७ ॥ महालक्ष्मीमहादे

वी, सौराष्ट्रगुणस्तूल्दवी। वेदूर्य्यायाइकाचूडा, सिंहासनस्तूसंस्थिमा॥
रत्नुर्तुजाविशालाक्षी, रक्तरुष्टदकधाविनी। नुपूवलावक्षूवा॥
नल्कुलुलधाविनी॥ वतै४सवविमसर्व्वाम्नी, कृष्टोमानिविरुद्धि॥
नी। विचित्रवलपुष्पश्रूः, वक्रगन्धानुलेपनी। तेलाक्ष्याविनी
देवी, सहसमवं वावत्रा। सिद्धिगन्धर्वनमिमा, रुवविद्याधवाद्धि॥
मा॥ देवीकाहृमहाकृप, संहानास्कृत्कलागभ। ह्रीलानयी०संस्थ
न, महालक्ष्मीनमामुग॥ ८ ॥ शृङ्ककण्ठस्थिमादेवी, सुरवृदा

निवासिनी नमस्ते भैरवी संयुक्ता, सुसूक्ष्मा ग्नेन मास्तुते ॥ जननी स
र्वभूतानां, सर्वलोकप्रकाशिनी । सर्वपापहरा देवी, संसारभयनाश
नकारिणी ॥ त्वमेव सर्वगा सूक्ष्मा, त्वमेव योगरूपिणी । त्वमेव सृष्टि
संहारी, त्वमेव स्थितिरूपिणी ॥ त्वमेव सर्वभूतानां, त्वमेव विश्वरू
पिणी । यो ध्यायेत्त्वां महादेवि, देवदेवं महात्मनं ॥ भैरवं भीषणं घोर
घोराघोरविरूपिणं । नीलाञ्जननिभं देहं, महाकायं महोत्सवं ॥
नानायुधसमाकीर्ण्णं, नानावर्ण्णधरं प्रभुं । त्रिलोचनं महारौद्रं ॥

वह्निसूर्य्यसमप्रभं ॥ क्रोधरूपं महारौद्रं, दावाग्निसमतेजसं । त्रिशूल
खट्वाङ्गं डमरुं मुद्गरं च धरं ॥ पाशाङ्कुशं धनुर्बाणं, खड्गचर्म
धरं प्रभुं । पात्रकुम्भधरं देवं, वज्रखड्गगदाधरं ॥ कपालकर्तृ
वज्रं गजचर्मविभूषणं । दंष्ट्राकरालवदनं, व्याघ्रचर्मकटीवृतं,
व्यालक्षणेन सर्वाङ्गं, नवनागविभूषितं । शीर्षमालाधरं देवं, क
पालमालिकाधरं ॥ श्मशाने महाघोरे, कपालस्तम्भरूपिणं । समन्त
प्रभास नानारूढ, नृत्यमानं प्रियासह ॥ सर्वालङ्कृत स्वगजर्हे, कृ

पूर्व्वसंनिरसंवत्सुक्षयी० ह्रिंगं निर्ग्यं, अष्टकैताल्विवासिनं ॥ मू
र्ष्टमुक्ति ह्रिंगादेवं, अष्टाष्टकयोगिनी प्रियं वत्सुयी० ह्रिंग निर्ग्य
स्तुकालीसमावृतं ॥ लडकावन्नक्रमानं, वीनरतुं नमाम्यहं ॥ श्री
मूलिगा श्रीनूत्पवत्सु, श्रीउड्यानैरवक्रयालतोषमर्त्तहाना सौ
नवाह्नं नमाम्यहं ॥ ॥ श्रीत्रिवेल्लुनत्वाधिकानाथ्य, खखत्पाश्वबीर्यं
का१ त्रिसर्वकार्येषु वर्त्मन्त, दिव्यानन्दी कस्तुमिगं१ ॥ दत्तदिक्ष गुरुरूपा
लाभ्य, क्रमालब्धे वंवतुर्दल १ । पश्चाश्रगत्तह्नतपालाश्च, क्रमयालीनमी

स्तुतं ॥ श्रीनाथनाथं महानाथ, आदिनाथं नमस्थेवच । श्रीनाथ्यास्ति
हिनाथश्च, मीननाथं नमाम्यहं ॥ कृतनाथं वयी० श्च, द्विपनाथमहा
बल । उग्रनाथश्च रूपश्च, वटुकनाथ नमाम्यहं ॥ श्रीनाथ्यनवनाथ
श्च, श्रीउड्डनाथमन्त्रमंत्रत्का विंशद्विपञ्चस्तत, श्रीनासीतिं नमाम्यहं ॥
॥ श्रीचतुर्यानाथ सिद्धानां, तन्मानश्चकुलान्वयं । श्रीगतिद्धिस्कथवी
र्यं, मत्तद्धेवनमाम्यहं ॥ एककालं द्विकालंवा, त्रिकालं यः१ पठेन्नर
ः१ गत मावर्नय त्सोपि, त्राप्नाति स्तुत्तत्क्रमं ॥ श्रीनासय श्रौकवि

क्रान्ति, नामय द्धिमदवराजू । नामय ... लर्द्द नामम्न, नामय सुद्दश्व
र्द्दर्न ॥ नामयहृयदारिद्र, नामय द्वियूमन्दलि । नामय दग्नि वोनाद्वि
नार्तय क्राजश्रा धर्ज ॥ नामय स्तविषेधानं, नामयद रिवावकी ।
नामय स्राकृद्वबानि नामय स्तर्हयाटकी ॥ स्रायूत्रा नाम्यमे नवर्थ्य ध
नक्षान्यं विवर्द्धनं । धर्मार्थकाममोक्षाणां, सदाश्रोतान्यसाधकं ॥
विद्धिति द्धिश्रियंस क्षी, विद्याज्ञानसमा चिन्तधावृद्धिपक्षासमित्व
वर्द्धते च दिने दिने ॥ नाकाले मरणं तस्य, उत्पाते नामय स्तपा ।

सर्वलोके श्रुयस्तस्य क्लि, दीर्घमायुर्वलस्यते ॥ ॐ श्रियीभवतानन्तु
नीतिसमाप्त ॥ ॥ ७॥

ॐ नमः श्रीवज्रयोगिन्यै ॥ यश्लीलाक नमय मयम निंलब्ध्वाक्रु
लेगमिं वा, विघ्नक्षेल विक्तिस्तवेदनव नशीनाथ प्रख्यातिम ४।
वे धासिद्धियदाचिमागु द्दृव द्दकदत्तू वास्तर्द्धन रुश्लीलाकवना
थुदर्मितय नाश्रीमा विनीयाउन ४॥ नयालाव नियालमोलिमूक्
टशीराक्षनन्द्रा खवा, घ्रुयाक्वक्रिमनाव थाचि नद्द निप्रख्यानर्सं
कीर्त्तिय लाव ह्वावकुलाद्द्यांकमाद्धिजो ... यालद वाल्मज द्यूनाय

ड्लिमातनानिविधिरड्डीमातृकानांक्रमेः॥ ॥अथ ओं गणेशपूजा
विसर्जन.वंम्स ॥ अथ ॐ हे मानसमातृकागणेशपूजा.निमित्यर्थं जी
कुलमालपूयनमः॥ वक्ष्ये बीजमथ्यर्थं म्यादि॥ अद्धित सर्वकार्यादिक्र
लमार्गगुरु वन्दे॥ नौमित्र्यकाशमक्ति ऽर.उक्तिमूक्तिफलप्रदं॥ श्री
मातृपूजाविधि॥ ॥गा गुरुनमस्कारं॥ अखण्डमण्डलाकारं याद्दि॥
गुरुनमस्कारं॥ स्वासनं॥ पद्मासनयाद्कां॥ पद्मासन.कूर्मासनं ः

तिस्वासन॥ नकिलिरविश्वकाकूनायकः अंकुरयरद्र॥ दशधानवंध
नं॥ ओं हूं ह्रः दुवजयकुलयाहा॥ स्वात्मावनं॥ ओं वलमकुलेकुलम
वलझांझींझूं ह्रः स्वाहा॥ दशधानवन्धनं॥ ॥ततः प्राणायामयक्ष्य
मवनं॥ १८.७४.३२॥ ॥ततो मातृकान्यास॥ अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मऋष
यनमः शिर॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे॥ मातृकासरस्वतीदेवतायै
नमः हृदि॥ हलो बीजयानमः कण्ठे॥ स्वरशक्तये नमः सर्वाङ्गे॥ ओं ननमः

दिन्यासः ॥ ततः करषडङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं
तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ॐ ह्रैं अनामिका
भ्यां हुं ॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ॐ ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां
फट् ॥ एवं हृदयादि ॥ ॥ अथ ध्यानं ॥ उद्यत्कोटिदिवाकरद्युतिनिभां वाउः
ल्गाचूपीनस्तनी, वह्निन्द्वक्षिकिरीटहारनवरसनामश्रीवसंशोभिता । वि
द्याकनयरूकुण्डजपवनांयाभाह्युलोपूस्तकं, दिद्यान्नाजगदीश्वरा त्रिनय
नायष्पनिषण्णसूर्वी ॥ इति मातृकान्यासः ॥ ॥ ततः पीठन्यासः ॥
ध्यानं ॥ सितासितानृत्र्यश्याम, हृदिस्थितान्यन्तरूक्रमात् ॥ पूनः पूनः क्रमाद्
विपक्षेभन्तीरसंज्ञकाः ॥ इति ध्यानं ॥ ॥ ॐ कामरूपपीठाय नमः ॥ ललाटे
ॐ वाराणसीपीठाय नमः ॥ मूलब्रह्मणि ॥ ॐ नेपालपीठाय नमः ॥ दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ पौ
ण्ड्रवर्द्धनपीठाय नमः ॥ वामनेत्रे ॥ ॐ पुरस्थितपीठाय नमः ॥ दक्षकर्णे ॥ ॐ कान्यकुब्जपी
ठाय नमः ॥ वामकर्णे ॥ ॐ पूर्णशैलपीठाय नमः ॥ दक्षनासापुटे ॥ ॐ अर्बुदपीठाय

रा॥वाममनासापुटे॥ठँ आषाढकयीभयर॥दक्षगण्डे॥ऌँ अकास्रयीभयर॥वा
मगण्डे॥ॡँ तिश्रानयीभयर॥ऊर्ध्वोष्ठे॥ऐँ कामकोटकयीभयर॥अधरोष्ठे॥ओँ
कैलाशयीभयर॥ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ॥औँ हिमवनगयीभयर॥अधोदन्तपंक्तौ॥अँ
केदारयीभयर॥जिह्वाग्रे॥अः भद्रेश्वरयीभयर॥मूर्द्ध्नि॥कँ श्रीपीयीभयर॥दः
क्षवाहौ॥खँ ओङ्कारयीभयर॥दक्षकूर्प्परे॥गँ जालन्धरयीभयर॥दक्षः
मणिबन्धे॥घँ मालवयीभयर॥दक्षांगुलीमूले॥ङँ विरजयीभयर॥दः

क्षांगुल्यग्रे॥चँ कृतक्ष्यीभयर॥वामबाहौ॥छँ देविकोटयीभयर॥वामकू
र्प्परे॥जँ गोकर्णयीभयर॥वाममणिबन्धे॥झँ मारुतेश्वरयीभयर॥वामां
गुष्ठमूले॥ञँ अट्टहासयीभयर॥वामांगुल्यग्रे॥टँ राजगृहयीभयर॥द
क्षवंक्षौ॥ठँ महापथयीभयर॥दक्षजानुनि॥डँ कोलागिरियीभयर॥दक्षगुल्फे॥
ढँ एलापुरयीभयर॥दक्षपादांगुलिमूले॥णँ कालेश्वरयीभयर॥दक्षपा
दौ॥तँ जयन्तिकायीभयर॥वामवंक्षौ॥थँ उज्जयिनीयीभयर॥वामजानुनि॥

दं वज्रिणीपी भयर॥ वामगुल्फे॥ धं दीनकाबीनपी भयर॥ वामपादांगु
लीमूले॥ नं दक्षिनायूनपी भयर॥ वामपादांगुल्यग्रे॥ पं ऊड्डीनपी भयर॥
दक्षपार्श्वे॥ फं प्रयागपी भयर॥ वामपार्श्वे॥ बं षष्ठीनपी भयर॥ पृष्ठे॥
भं मायापूर्वीपी भयर॥ नाभौ॥ मं कज्जनपी भयर॥ उदरे॥ यं मलयपी
भयर॥ हृदि॥ रं श्रीशैलपी भयर॥ दक्षांसे॥ लं मन्त्रपी भयर॥ वामांसे॥
वं निविवनपी भयर॥ ककुदि॥ शं माहेन्द्रपी भयर॥ हृदादिदक्षकरां

गुलियर्व्वन्त॥ षं वामनपी भयर॥ हृदयादिवामकरांगुलियर्व्वन्त॥ सं
हिरण्यपुरनपी भयर॥ हृदयादिदक्षपादांगुलियर्व्वन्त॥ हं महालक्ष्मीपुरनपी
भयर॥ हृदयादिवामपादांगुलियर्व्वन्त॥ क्षं छायाक्षत्रपी भयर॥ हृदया
दिककुक्षियर्व्वन्त॥ ॐ नियस्थानपी ०न्यास॥ ॥ पाण्डवपी ०न्यास॥
नयथा॥ ञूं ॐ ऊं ॐ कामरूपपी भयर॥ ध्यानस॥ ञूं ॐ ऊं अं ॐ जा
लन्धरपी भयर॥ नूगनस॥ ॐ पूर्णगिरिपी भयर॥ कपालस॥ वं न

ऊष्ठिध्यानयी भयर ॥ वसथास्त ॥ ॐ श्रीं वावानम्हीयीभयर ॥ ज्ञानि का
स ॥ गं गञ्च वन्द्वीयीभयर ॥ मिरवानि ॥ नसं ॥ चं नेमायायूवीयीभयर ॥
खालस ॥ वं गमथूवायीभयर ॥ गवपकस ॥ सं भञ्जूथाश्वायीभयर ॥
ऊँ ऽङ्गुलिस ॥ लं कं कान्दीपूनयीभयर ॥ रवडाङ्गुलिस ॥ ॐ यष्टुयोवंन्या
स ॥ ॥ अथ नारं कलमकुम्भ श्वादिन्यास ॥ ह्यमकुल नालकुम्भ स थ य र ॥
लिन ॥ निवृक्ष कुन्दस नमः ॥ मूर्ध्व ॥ विघ्न गणेशदेवनायेर ॥ हृदि ॥ गंबी

जायर ॥ कं ॥ गः कं कु यर ॥ सर्वाङ्ग ॥ ॐ मिसुश्चादिन्यास ॥ ॥ ग
गश्चनरुडगन्यास ॥ गः ऋज्ञायरुद्र ॥ ४ ॥ गं ज्ञूगुरुश्यानमः ॥ गीग
ऊँनी श्रीं स्वाहा ॥ गूंम क्षमायाँवषट् ॥ गौं ज्ञूनामिकायां हुं ॥ गौं कनिष्ठ
कायांवीषट् ॥ गः कवतल पृष्ठाभ्यांस्त्र ॥ एवं हृदयादि ॥ ॥ अथ
गयूजा ॥ हं स्त्रीं जलयायर ॥ हृदयादि. ध्वन् मूजा ॥ गायत्री ॥ गत्पुरु
षाय विद्महे. वक्रतुण्डाय धीमहि. तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ ॥ अर्घपा

यपूजा॥ ऐँ कानासनाय३॥ अर्घ्यादि॥ भगरु नशुद्धि४॥ आसनपूजा॥मा
लिनी॥ आवाहनादिपूजा लिपच्यं॥ नमस्कार बलि४॥ ॥श्रीसम्व:
र्त्तिष्वावाह्य.ऐदवादि.बलि॥ पुवाह्य.मुद्रा॥ ॥यविवाहादिपूजनं॥
प्रयागादि॥ जयादि॥ हेतुकादि॥ ब्रह्मान्यादि॥ असिताङ्गादि॥ वज्रकि:
न्यादि॥ ध्वजं सेबलि॥ ॥गणाम ध्वमूलदेविपूजा॥ आधारशक्त्यादि
७॥ पद्मासनाय२॥ ऐं सर्वेशक्तिकमलासनाय२॥ मूर्त्यासनाय२॥ ध्या:

नं॥ नक्राभ्रनं नक्रवर्त्तु. नक्रगन्धानुलेपनं। नक्रपुष्पेश्वपूजमानं.
दुन्दिलं वक्रभोलिनं॥ त्रिनेत्रं वामनं विभ. बीजपूर्णं वरद्दुया। वाम
दक्षाईर्षायां यागशीं. कुक्लीवक्रंवन्दे ध४॥ पद्मासनं सर्षे स्वर्षं. ध्यायद्विघ्न
विनायकं॥ ध्यानपुष्पं नमः४॥ आवाहनस्थापनसंनिधानावगुण्ठनं ध्व
नुष्यानि मुद्रां दर्शयेत्॥ गँ गः विघ्नविनायकाय याघं नमः४॥ अर्वेश्राव
मनीयस्पर्शस्नान.वन्दनादिपूजां॥ ॥गणावलपिध्या॥ बलि॥ नग

स्तुपूजा॥ यां ... नायर॥ ऊं ... नायर॥ वक्त्रायर॥ वनायर॥ ॐ वस्तुपूजा॥ ॥
ततः आवरणपूजा॥ सच्चिन्मय ... विघ्ननाशन ... दि
मदव्य विघ्ननाशनायर॥ गं हृदयायर॥ गीं शिरसे॥ गूं शिखायै॥ गैं
कवचाय॥ गौं नेत्रत्रयाय॥ गः अस्त्राय॥ ॐ त्रिकोणपूजा॥ ॥ततः अष्ट
दलपूजा॥ तीं तीव्रायैर॥ ज्वां ज्वालिन्यैर॥ नं नन्दायैर॥ भों भोगदायैर॥ कां
कामरूपिण्यैर॥ ॐ उग्रायै तेजोवत्यैर॥ सं सत्यायैर॥ विं विघ्ननाशिन्यैर

ॐ अष्टदलपत्रपूजा॥ ॥ततः अष्टगणपूजा॥ श्वेतवर्णगणनायर॥ रक्त
वर्णगणनायकायर॥ नीलवर्णगजवक्त्रायर॥ ॐ त्रिकोणपूजा॥ ॥
पूनः अष्टदलपत्रपूजा॥ वं वक्रतुण्डायर॥ एं एकदन्तायर॥ मं महोदरायर
गं गजाननायर॥ लं लम्बोदरायर॥ विं विकटायर॥ विं विघ्नराजायर॥
धूं धूम्रवर्णकायर॥ ॐ अष्टदलपत्रपूजा॥ ॥पूनः अष्टदलपत्रपूजा॥ ब्रां
ब्राह्मीयैर॥ मां माहेश्वर्यैर॥ कौं कौमार्यैर॥ वां वाराह्यैर॥ ॐ ऐं इन्द्रा

ल्पैर॥ वाँ वामूल्लायेर॥ माँ महाकालक्षेर॥ बलि॥ मध्ये चक्रपूजा॥ ब
नानाखड्गं गपूजा॥ लँ हूँ इन्द्रायेन्द्र वाहना सनाय हू वाधिपतयर॥ वँ अ
येच्छा गासनाय मजा धिपतयर॥ मँ यमाय महिषासनाय प्रेताधिपत
यर॥ नैँ नैऋत्याय प्रेतासनाय नाकसाधिपतयर॥ वँ वरुणाय मकरास
नाय जलाधिपतयर॥ यँ वायवे हरिणासनाय प्राणाधिपतयर॥ कँ कु
वेनाय क्षुल्लासनाय यक्षाधिपतयर॥ हँ ईशानाय वृषासनाय स्वर्गा

धिपतयर॥ ब्रँ ब्रह्मणे हंसासनाय लोकाधिपतयर॥ अँ अनन्ताय गरुडा
सनाय नागाधिपतयर॥ अष्टायुधपूजा॥ वज्राय र॥ शक्तये र॥ दण्डाय र
खड्गाय र॥ पाशाय र॥ ध्वजाय॥ गदाये र॥ त्रिशूलाय र॥ चक्राय र
वज्राय र॥ ह्रूं पञ्चकोण पूजा॥ मूलमन्त्रेण खड्गं बलि॥ स्रुवा मुद्रा ग
जमूलादि दर्शयेत्॥ ॥धनमारकोपूजा॥ षडाम्नायादि निर्वाणकेपूजा
॥बलिप्रदानं॥ कँ कुलयालाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ह्रीं क्रीं कुलपूज बटुक

गणेशमद्दलि ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं गणपतये वर वरद सर्व्वजनं मे वशमानय स्वा
हा. विघ्नविनायकाय बलिं ॥ विनिगणबलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ऊर्द्धवक्त्राय
नावाध्यादि ॥ आवाहनादि ॥ धूप. दीप. नैवेद्य ॥ धूपाद्यादिनाम्बुरं. पञ्चान्नं
धूपदीपर्क नैवेद्यं कलिगरा क्षा. गृह्णानयव मण्डव ॥ माहनीहृय ॥
विदवादि. गणेशया १०८ ॥ जापसंकल्प ॥ ॥ मूलमन्त्र ॥ ॥ तर्प्प
णा ॥ स्वयम्पूजा ॥ पञ्चबलि ॥ द्वगनस्तुय ॥ तर्प्पणादि समर्पयं ॥ दक्षि

णा ॥ नुक्षानक ॥ स्नानकोकायबलि ध्याय ॥ साक्षिथय न्यासलिकाय ॥
इति गणेशार्च्चनविधि ॥ ७ ॥ थन भाव क्षायणी पूजा ॥ लिनलेनाव:
म्य ॥ ॐ यजमानस्वामाकाव क्षायणीपूजा निमित्यर्थं कुलमार्गगुरय
नम ॥ मूलिन सर्व्वका चचिपि. कुलमार्गगुरे नर्व ॥ नी मित्र का गग क्षिश्र.
तुक्षिमू कि स्थलपर्द ॥ सूरवगुमगुलादि ॥ दिग्बन्धन प्राणायाम ॥ मातृ:
कान्यास ॥ याठंन्यास ॥ मत्र मूलस ध्यादि न्यास ४ ॥ मूलन्यास स्यावावर्य

त्रिष्टुबयनमः॥शिरे॥गायत्रीछन्दसेनमः॥मुखे॥ब्रह्मऋषये२॥हृ
दे॥ब्रह्माणीदेवतायै२॥हृदि॥ॐकीलकायै२॥पादयो॥ॐविनियोगः
षडादिन्यासः॥ ॥अथकलषडङ्गन्यासः॥ब्रांअङ्गुष्ठाभ्यांनमः॥ब्रींत
र्जनीभ्यांस्वाहा॥एवंप्रकारेण करन्यासहृदङ्गन्यासः॥ ॥जलपात्रपूजा॥
गायत्री॥ब्रह्माय्यैविद्महे।हंसवाहनायेधीमहि।तन्नोमातृप्रचो:
दयात्॥ ॥अर्घपात्रपूजा॥गुरुपंक्ति।आत्मपूजानं॥मालनीयंवलि॥

सर्व्वभूतादिदेवपूजा॥ ॥पविवानपूजा॥हेतुकादिक्षेत्रपालादिपूज
नवलि॥ ॥गणमूलदेवीपूजा॥आवाहनमंकृत्यादि॥हंसासनायर॥
ध्यानं॥ध्यायेद्ब्राह्मींपलाशकाहंसारूढांचतुर्म्मुखीं।अक्षमालवनारी
ति।कमण्डलुकराम्बुजां॥ध्यानपूर्व्वनमः॥पाद्यार्घाचमनीयादिपुष्पंदः
द्यात्॥ब्रांब्रह्माण्यै२॥तिर्थ॥वलि॥ॐ ब्रांब्रह्मायणीदेव्यै२वलि।तिर्थ॥ ॥
गणसमूहपूजा॥अक्षमालायै२॥वलौ पुस्तकायै२॥अस्वायायर॥कमण्डलवे२॥

ॐ यन्त्र पूजा॥ ॥ गणा आवरनणपूजा॥ तद्विकम यथ नथ्यादि॥ त्रां हृदया
त्रीं शिरसे॥ त्रूं शिखायै॥ त्रैं कवचाय॥ त्रौं नेत्र॥ त्रः अस्त्राय॥ ॐ तिपद्म
णपूजा॥ ॥ गण ४ थाउनण पत्रपूजा॥ वौं विघ्नाम निस नवस्थेर॥ ञीं ञा
नस नवस्थेर॥ नौं नीलस नवस्थेर॥ [illegible]॥ ॐ विघ्ननाद
स नवस्थेर॥ घौं घट स नवस्थेर॥ कौं क्विनि स नवस्थेर॥ मौं मदस्त
वस्थेर॥ लौं लाकंब स्थेर॥ तौं तिपूठास्थेर॥ वौं विपूनास्थेर॥ वौं वू

ड वागी स्थेर॥ वौं विघ्नवागी स्थेर॥ मौं मूरखवागी स्थेर॥ वौं विद्वि
वास्थेर॥ यौं यघावस्थेर॥ ॐ कुष्मान्डास्थेर॥ ॐ तिथाउ नयत्रपूजा॥
गणा हृदल पूजा॥ त्रह्मान्यादि॥ ॥ अष्टकोनयूजा॥ ॐ स्वादि॥ ॥
गणास्त्र पूजा॥ वज्रादि॥ आवाहन यमकुंडा॥ धनमान कालूगा॥ ध
कुताम्रायादि. निर्वानयथक॥ तनावलि ४॥ तिदवया॥ विकाष
वलि॥ वैं गर्जूं ७६ धीपायाले आकाशेत्रह्माणी सर्व मंगलावैश्म

मृत्युं क्षेत्र वसहिताये बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ मध्यादि यन्त्र क्षिमदवी
स्याबलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ उर्ध्व स्मा नुणि ॥ स्वावाक्ष.पञ्च.यानिमूज ॥ धू
य.दाय.ने वन्ध आजाय ॥ चिदवादिमूलदवल १०८ ॥ गुरुमाधि ॥ ॥
स्नाथ.नक्षि.सूत्रादिक्रम ॥ श्री विकाफव ॥ समूदिगनुल कावी.माह
कानीयनीया.सुक्षलसूत्र विनादीमंन्यमान्यदाय ॥ चिपूक्षलविनि
हलु सा सम्पाद्दनी. समूचिनमूनिवन्यावाक्षमानि नष्पूनाउ ॥ यः

धन ॥ वाक्नसह ॥ गर्थ्वन ॥ एकानक ॥ ॥ वलिदान ॥ दक्षिणा.सुम
याद्दि ॥ साक्षिथाय ॥ यजमानस.माह कावक्ष्मानी पूजा समुक्ष्य सा
क्षिनीधी ॥ निर्म्माप्जा ॥ ॐ ल विकायेर ॥ २ ॥ ॐ विश्वाय नापूजा
विधि ॥ ॥ ॐ ॥ ममामाहश्वनापूजा ॥ ध्यावंसा ॥ सूत्र.यजमानि
स्यमाह कामाहश्वनापूजानिमित्यर्थ क्षलमाक्षेत्रयया ॥ स्वस्ति नमक्ष
न.प्राणायाम ॥ मातृकान्यास ॥ पीठन्यास ॥ गगामूलज स्यादि न्यास ॥

मूलमन्त्र स्यत्र मन्त्र षयनम ४ लिने ॥ विनाङ्कन्दस दमन्थे ॥ मार्ह
स्त्वनी दवनोयेि २.हृदि ॥ ॐ ह्रीं न क्त यर दल ॥ अथ कीलकाय २.त
छीके ॥ अथ कवच मन्यास ४ ॥ ॐ ह्रीं मूलमन्त्र यहृदू ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं मू
तुषास्वी २ ॥ अथ मात्र गवति त्रैनी स्यौं स्वाहा ॥ मार्हश्व नीम त्र मा स्यौं
वषट् ॥ मार्हश्व नी मूनामिकायाँ ह्रीं ॥ स्वाहा कनिष्ठकायाँ वौषट् ॥
ॐ ह्रीं करतल सयूहाम्यो हृदू ॥ एवं हृदयादि ॥ जलयापूजा ॥ म

स्नी ॥ ह्रीं कनयियाये विमर्दह मार्हश्वनी धीमहि तन्नो नेसप्रचो
दयात् ॥ अर्घपात्र स्थापन्तु हिम्मु समपूजा ॥ मार्हश्वनी वंदवलि ॥
पीठवनी ॥ दव ॥ अथ मूल देवी पूजनं ॥ आसन ॥ ध्यानादि ८ ॥
वृषासनाय २ ॥ ध्यानं ॥ वृषारूढां त्रिनयनां त्रिनेत्रां शितसन्निरा
द धनौ मूल देमन्त्र महादिवलयाम्बुजं ॥ ध्यान धूं २ ॥ पाद्यार्घाचम
नेयपूर्वक ॥ दिश ॥ ॐ ह्रीं न मार्ह गवति मार्हश्वनी दृ ॥ वलि ॥ विंग ॥

क्रुं मादल्वर्चेय३॥ तिथ॥ धनगंळपूजा॥ पूलायर॥ तमनूका
यर॥ ॥लखिन्मयथ्यादि॥ गगंभ्रावनमपूजा॥ षड्क्षाल्ले॥ ॐ
ह्रींह्रूंदयायर॥ नमोहगवतिमिवसस्वाहा॥ माहल्वर्चेमिरवा
येवषट्॥ स्वाहाकवचायहूं॥ नमोहगवतिनउरुया यदीयह॥
ॐ ओं ह्रूम्क्रय ह्रूं॥ ॐ निषक्षाल्ले॥ ॥ताद्यदगयपूजनं
वंवालायेव॥ शींभक्ष्री३॥ नींनिद्यक्षिन्नाये॥ ॐ भ्रूनपूर्व

येव॥ लीलक्षेश्र३॥ वींवजर्वर्चे३॥ लिंखविनायेव॥ नीमिवहूय
३॥ लींतिकल्यक्षी३॥ वींवश्चतिकल्यक्षी३॥ ॐ तिद्यादगयपूजा॥
गगोस्वयपूजा॥ उक्षाल्यादि॥ ॐ निमूहूवण॥ ॥गगोम्ह
दूंगपूजा॥ ॐ नुाहिवजादि॥ भ्रावाक्क. मिल्लतमुद्रा॥ धननाल
कापूजा॥ षडाम्नायादि निर्वाणाकं॥ ॥गणावलिखदानं॥ लिद
व॥ मूलया॥ लें ग कं ग वानामस्यौं ॐ लाँली मादल्वनीवहूंकीउ